भारत का स्वर्णयुग
गुप्त काल

Ashish Kumar Thakur
B.A-1 History, paper-1.
Dr. L.K.V.D. College, Tajpur
Samastipur

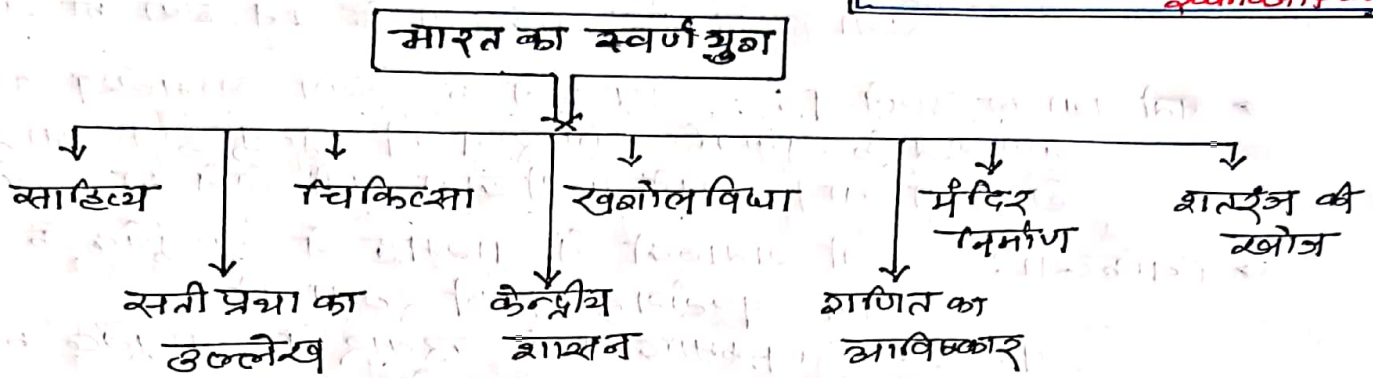

* गुप्त-स्वर्णयुग : काल्पनिक या वास्तविक :—

• सांस्कृतिक उपलब्धियों के आधार पर अनेक विद्वानों ने गुप्त काल को भारतीय इतिहास का स्वर्ण युग, हिन्दु-पुनर्जागरण का काल एवं राष्ट्रीयता के पुनरुत्थान का युग माना है।

• जब गुप्त राजाओं ने भारत में पुनः राजनीतिक एकता स्थापित की, विदेशियों को पराजित किया, प्रशासनिक व्यवस्था स्थापित की, धर्म, कला, और साहित्य तथा ज्ञान-विज्ञान को प्रोत्साहन दिया।

• गुप्तयुग वास्तव में स्वर्ण युग था। गुप्त युग अगर स्वर्ण युग था तो उत्तरी भारत के उच्च वर्णमाला के लिए। साधारण जनता तो अभावों और कठिनाईयों से ग्रसित थी। यह हिन्दु-पुनर्जागरण का युग भी नहीं था।

• हिन्दु शब्द का व्यवहार अरबों ने गुप्त-युग के पश्चात भारतीय के लिए किया। गुप्त-युग की मुर्तिकला पर बौद्ध धर्म का स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित होता है।

• ज्ञान-विज्ञान भी विदेशी प्रभाव से मुक्त नहीं था। वराहमिहीर के रोमक एवं पौलिश सिद्धान्तों पर सिकंदरिया के ज्योतिर्विद पाल प्रभाव देखने को मिलता है।

• साहित्यिक रचनाओं-ब और ब्राह्मणधर्म का विकास भी प्राचीन परंपराओं से ही विकसित हुआ।

Ashish

↳ साहित्य :- कालीदास, जिसे भारत का शेक्सपीयर कहा जाता है, द्वारा अभिज्ञान शाकुंतलम की रचना की, जिसमें राजा दुष्यंत और शाकुंतला के प्रेम कथा का वर्णन है।

↳ सती प्रथा का उल्लेख :- गुप्तकाल के ऐरण अभिलेख 510 ई० में भानुगुप्त के सेनापति गोपराज की मृत्यु हुण आक्रमण में हो गया था। इसके पत्नी द्वारा सती होने का उल्लेख है।

↳ चिकित्सा :- 6 वी शताब्दी में वाग्भट्ट ने आयुर्वेद के प्रसिद्ध ग्रंथ अष्टांगहृदय की रचना की।
चन्द्रगुप्त 'II' विक्रमादित्य के दरबार में आयुर्वेद का विद्वान और चिकित्सक धन्वन्तरि थे।

↳ केन्द्रीय शासन :- सर्वोच्च अधिकारी राजा होते थे और राजा के परामर्श के लिए मंत्रीपरिषद की नियुक्ति किया जाता था। राजा कार्यपालिका, न्यायपालिका एवं व्यवस्थापिका का प्रधान होता था।

↳ खगोलविद्या :- आर्यभट्ट इस युग के महान खगोलशास्त्री व गणितज्ञ थे। इन्होंने 'आर्यभटीय' नामक ग्रंथ की रचना की थी। आर्यभटीय में आर्यभट्ट ने बताया कि 'पृथ्वी सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाती है और अक्ष पर भी घूमती है' जो आज भी मान्य है।

- वराहमिहिर ने बृहत्संहिता एवं पंचसिद्धान्तिका नाम के खगोलशास्त्र ग्रंथों की रचना की।
- ब्रह्मगुप्त का 'ब्रह्म सिद्धान्त' भी इसी काल का खगोलशास्त्र का प्रसिद्ध ग्रंथ है।

↳ गणित :- संख्याओं का स्थानीय मान व शून्य का विकास।
आर्यभट्ट इस युग के महान गणितज्ञ थे। इन्होंने आर्यभटीय नामक ग्रंथ में अंकगणित, बीजगणित तथा रेखागणित की विवेचना की गई है।

↳ मंदिर का निर्माण :- गुप्तकाल में सारनाथ मूर्तिकला का एक बड़ा केन्द्र था। देवगढ़ का दशावतार मंदिर, सिरपुर का लक्ष्मण मंदिर, उदयगिरि का गुहा मंदिर, एलोरा एवं अजंता व बाघ की गुफा। नालंदा महाविहार का भी इसी समय स्थापना हुई और आगे चलकर विश्व विख्यात शिक्षा केन्द्र बना।

↳ शतरंज का खेल :- 64 खानों और 32 मोहरों वाले शतरंज खेल की शुरुआत गुप्त साम्राज्य (320-550 ई०) के दौरान भारत में हुई थी।

Scanned with CamScanner